# ख्वाब और हकीकत

पलायन, जेण्डर व एच.आई.वी./ एड्स
के मुद्दों पर स्वाध्ययन किताब

**सम्पादन टीम**

**महेन्द्र कुमार, रवि जीना, सतीश कुमार सिंह, अभिजीत दास, जशोधरा दासगुप्ता**

**चित्रांकन**

**गणेश डे**

**मुख्य पृष्ठ व पेज सज्जा**

**अयन चक्रवर्ती**

**प्रकाशक**

**सहयोग**

ए-240, इंदिरा नगर, लखनऊ, 226016

फोन व फैक्स - 0522 2310860, 2341319

ईमेल - kritirc@sahayogindia.org

वेबसाईट - www.sahayogindia.org

**आर्थिक सहयोग**

**यूनिफेम**

डी- 53 डिफेन्स कालोनी, नई दिल्ली - 24

फोन - 011 24646471, 24622136

**संस्करण प्रथम**

**2007**

**मुद्रक**

**क्रियेटिव प्रिंटर्स, लखनऊ**

# परिचय

''ख्वाब और हकीकत'' एक कहानी किताब है, जो एक गांव के लड़के से शुरु होती है और उसके पूरे जीवन की विभिन्न पहलुओं को रखती है, जिसमें उसके ऊपर आने वाले दबाव, संघर्ष, अपनों से दूरी, अकेलापन, नये महौल में अपने को तैयार करना, कुछ मजबूरियां आदि को दिखाया गया है। यह कहानी एक पलायनरत व्यक्ति के जीवन को बयां करती है। हमारे देश के अनेक राज्यों में अधिकाशतः लोगों को विशेषकर काम करने के लिए पलायन करना पड़ता है।

यह कहानी किताब एक संदेशात्मक किताब है। जो मुख्य रुप से युवाओं को ध्यान में रखकर बनायी गयी। क्योंकि आगे चलकर इन युवाओं का भी उस परिस्थिति से सामना होना है।

इस ''ख्वाब और हकीकत'' कहानी किताब का मुख्य उद्देश्य पलायन करने वाले या पलायन के लिए तैयार हो रहे युवाओं को पलायन के दौरान आने वाली परिस्थितियों से अवगत कराना है। जिससे वह पलायन पूर्व अपने आपको उस परिस्थिति के लिए तैयार कर सकें।

हम आपसे यह अनुरोध करना चाहेंगे कि इस ''ख्वाब और हकीकत'' कहानी किताब को ज्यादा से ज्यादा साथियों को भी पढ़ने के लिए दें, जिससे वह भी इसका लाभ उठा सकें।

यह कहानी किताब उ.प्र. के पूर्वाचंल के तीन जिलो कुशीनगर, देवरिया व गोरखपुर में क्षेत्र अध्ययन के दौरान लोगों के निकले अनुभवों को लेकर लिखी गई है। क्षेत्र अध्ययन जैसे महत्वपूर्ण कार्य को पूरा करने के लिए हम दीप्तो निल का आभार व्यक्त करते हैं। आनन्द पवार जिन्होने अध्ययन से निकली बातों को कहानी किताब के रूप में बनाने तथा प्रयुक्त चित्रों की परिकल्पना करने में अथक प्रयास किया, उनका भी हम हृदय से आभार व्यक्त करते हैं। जगदीश लाल सहित अन्य सभी साथियों को धन्यवाद देते हैं, जिनके प्रयासों से यह किताब पूरी हो सकी।

आशा है कि ''ख्वाब़ और हक़ीकत'' कहानी किताब आपके लिए उपयोगी रहेगी।

**– सम्पादन टीम**

राजेश गोमतीपुर नाम के गांव का लड़का है। उसने इसी साल दसवीं कक्षा पास की है। गांव में पढ़ाई की सुविधा न होने के कारण वह आगे की पढ़ाई नहीं कर सका। अब उसका अधिकांश समय अपने दोस्तों के साथ मौज मस्ती करने में गुजरता है और उसे इसमें मजा भी आता है।

राजेश के माता पिता उसको लेकर बहुत परेशान रहते क्योंकि उन्हें लगता है कि गांव के इस माहौल में राजेश पूरी तरह बिगड़ जायेगा। उन्हें लगता है कि उम्र बढ़ने के साथ ही राजेश को अब घर के कुछ खर्चे भी उठाने चाहिए। खेती–बाड़ी में तो मुनाफा है नहीं और गांव में कमाने का भी कोई जरिया नहीं है। उनके पड़ोसी रामचरन का बेटा संतोष, जो शहर में नौकरी करता है वह जब वापस घर आता है तो उसके रहन सहन को देखकर उन्हे भी लगता है कि किसी तरह राजेश भी शहर जाकर कुछ कमाए।

राजेश को मौज–मस्ती करते हुए दो साल बीत गए। इस दौरान माँ–बाप की रोज–रोज की किच–किच और खेती में कड़ी मेहनत करने के बावजूद कोई लाभ न होने से उसका मन गांव से ऊब गया था। इस साल जब सन्तोष शहर से गांव आया, तो उसका रहन–सहन और शान देखकर राजेश को भी लगा कि उसे भी शहर जाना चाहिए।

एक दिन राजेश के माता–पिता ने संतोष को घर पर बुलाया और राजेश को भी अपने साथ शहर ले जाकर काम दिलाने व अपने साथ रखने का अनुरोध किया। सन्तोष, राजेश को अपने साथ शहर ले जाने के लिए तैयार हो गया। राजेश भी संतोष के साथ शहर जाना चाहता था। जब वह शहर जाने के लिए तैयार हुआ तो उसके दिमाग में बहुत सारे सवाल

उठ रहे थे कि– मै कहॉ रहूंगा? खाना कौन बनाएगा? वहाँ के लोग कैसे होंगे? क्या मै ठीक से काम कर पाऊंगा? क्या मै वहॉ पर टिक पाऊंगा? संकट में मेरी मदद कौन करेगा? मुझे मेरे घर व दोस्तों की याद आएगी तो मै क्या करूंगा?, बिना काम के अगर मै लौटूंगा तो गांव वाले क्या कहेंगे? इन सवालों के साथ घिरा राजेश, सन्तोष के साथ कमाने के लिए शहर चला गया।

## क्या आप बता सकते हैं?

- राजेश के माता पिता उसे शहर क्यों भेजना चाहते थे?
- राजेश शहर जाने के लिए क्यो तैयार हो गया?
- राजेश के दिमाग में कौन–कौन से सवाल उठ रहे थे?
- किन किन वजहों से लोग गांव छोड़कर बाहर जाते हैं?
- गांव से बाहर जाने वाले लोगों को क्या बातें जानना जरूरी है?

इन सवालो से सम्बन्धित मुद्दों पर विस्तृत जानकारी के लिए अन्त में दिए गए देखें ‘जानकारी प्रपत्र’।

शहर पहुंचते ही राजेश वहां की चकाचौंध दुनिया देखकर दंग रह गया। बड़ी–बड़ी इमारते, तेज दौड़ती गाड़ियां, हर जगह भीड़, खुले आम घूमते हुए लड़के और लड़कियां। राजेश के लिए यह बिल्कुल नई दुनिया सी थी। दीवारों पर लगे हुए विज्ञापनों में अर्द्धनग्न लड़कियों के चित्र देखकर तो राजेश की आंखे खुली की खुली रह गई। ऐसा उसने कभी सोचा भी नही था। अब इन चित्रों को बार–बार देखने के लिए उसका मन करने लगा। उसे अपने घर की बहुत याद आती और वह सोचकर शान्त रह जाता। शहर की एक बस्ती में वह दोस्तों के साथ किराये के मकान में रहने लगा।

काफी दिनों तक राजेश को काम नहीं मिला बहुत मुश्किल के बाद एक बिचौलिए की मदद से संतोष ने राजेश को एक बेल्डिंग की दुकान में हेल्पर का काम दिला दिया। दिन भर मेहनत करने के बावजूद मुश्किल से वह अपने रहने और खाने पीने का ही खर्चा चला पाता था। लेकिन वह यह सोचता था कि जब मैं काम सीख जाऊगां तो तनख्वाह भी बढ़ जायेगी। उसे लगता कि इससे अच्छा तो अपना गॉव ही था कम से कम बना– बनाया खाना तो मिल जाता था उसे घर की याद भी सताती लेकिन वह यह सोच कर चुप रह जाता यदि मैं वापस चला जाऊंगा तो दोस्त क्या कहेंगे फिर घर वालों को मुझसे बहुत उम्मीदें भी हैं। दूसरी ओर शहर की चकाचौंध दुनिया उसे अपनी ओर खींच रही थी।राजेश यह सब सोचकर कड़ी मेहनत के साथ काम करने लग गया कि कुछ दिनों बाद सब कुछ ठीक हो जायेगा।

राजेश अपनी नौकरी पक्की करने तथा घरवालों को कुछ पैसे भेजनें के लिए बेल्डिग की दुकान में सुबह जल्दी आ जाता तथा शाम को भी देर तक काम करता रहता। राजेश के काम से उसका मालिक भी खुश रहता इसलिए जब कभी उसे पैसों की जरूरत पड़ती तो मालिक उसे उधार भी दे देता। धीरे–धीरे राजेश मालिक के एहसान तले दबता चला गया। एक दिन मालिक ने राजेश से कहा 'आज तुम दुकान में ही रूकना, मुझे तुमसे

कुछ काम है।' दुकान बन्द करने के बाद मालिक ने राजेश से यौन सम्बंध बनाने के लिए कहा। राजेश को कुछ समझ में नही आया और वह मालिक को 'न' नही कह सका। इसी तरह से बीच–बीच में बिचौलिया भी राजेश को नौकरी पक्का कराने तथा मदद करने का आश्वासन देकर अपने साथ ले जाने लगा। मालिक और बिचौलिए के अहसानों और दबाव तले दबा राजेश दोनों को 'न' नहीं कर पाता।

राजेश अपने छः–सात दोस्तों के साथ मिलकर एक किराये के कमरे में रहता, क्योंकि शहर में मकान का किराया बहुत ही मंहगा था। कम जगह और दोस्तों के एक साथ सोने से उनका शारीरिक सम्पर्क होता जिससे कभी– कभी उनमें यौन उत्तेजना बढ़ जाती। उनमें सेक्स करने की भावना उत्पन्न हो जाती, लेकिन राजेश यह बात अपने दोस्तों से नहीं कह पाता। इस बीच दीपक के साथ उसकी दोस्ती भी गहरी हो गई और वह जानबूझ कर दीपक के नजदीक सोने लगा।

राजेश बीच–बीच में कुछ पैसे घर भेजने लगा जिससे उसके घरवालों को बहुत खुशी होती। अब राजेश के पिताजी के पास पड़ोस के गांव से ही रिश्ते की बात भी आने लगी। राजेश के पिताजी ने सोचा कि मैं तो अब बूढ़ा हो रहा हूँ, घर में काम काज के लिए बहू भी चाहिए और अब राजेश तो कमा भी रहा है इसलिए शादी कर देना चाहिये। जिससे हमें भी बहू के हाथ की रोटी खाने को मिला करेंगी। घर में बच्चे होंगे तो मन भी लगा रहेगा। यह सोचकर राजेश के पिताजी ने शादी की बात तय करके राजेश को गांव वापस आने की चिट्ठी भेज दी।

इधर राजेश दोस्तों के साथ बीड़ी, सिगरेट भी पीने लगा था। उसका रहन–सहन बिल्कुल बदल गया, अब उसके खर्चे भी बढ़ गये थे। आय सीमित होने के कारण खर्चो के लिए वह अपने दोस्तों से उधार भी लेने लगा। एक दो बार तो कमरे का किराया देने के लिए उसे मालिक से भी पैसे उधार लेने पड़े।

पिताजी की चिट्ठी पढ़कर राजेश कुछ तय नही कर पा रहा था कि घर जाये कि न जाये, पैसे भी नहीं हैं। घर वाले शादी की बात कर रहे हैं। यह जानकर राजेश सोच में डूब गया कि अब शादी के लिए मना करें भी तो किस कारण से। पिताजी की बीमारी की भी उसे चिन्ता रहती। कई तरह की बातें सोचते हुए राजेश ने गाँव जाने का निर्णय ले लिया। वह लगभग दो साल बाद अपने गांव वापस जा रहा था। वह यह

सोचकर बहुत खुश था कि अब लोग उसका भी सम्मान करेगें, दोस्तों के बीच में उसकी धाक जमेगी घर वाले उससे अच्छा व्यवहार करेंगे। इसके लिए राजेश ने मालिक से कुछ पैसे उधार ले लिए और वापस लौटकर आने पर पैसा चुका देने का वादा किया।

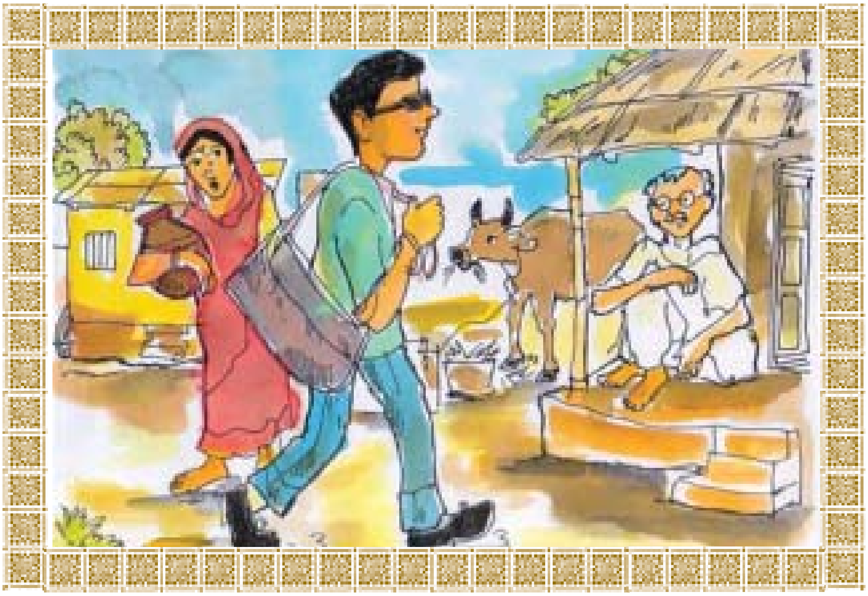

जब राजेश गॉव पहुचा, उसे देखकर घरवाले बहुत खुश थे। उसके पहनावे व रंग–ढ़ग को देखकर उसके दोस्त भी उसे पहचान नहीं पाए। उसका रहन–सहन बिल्कुल बदल गया था। टी शर्ट, जीन्स पैन्ट, आंखों में काला चश्मा था। गॉव में हर जगह उसकी खूब चर्चा हो रही थीं। दोस्त भी अब अक्सर उसे अपने साथ घूमने ले जाने के लिए घर आने लगे थे।

## क्या आप बता सकते हैं?

- शहर जाकर राजेश ने नया क्या देखा?
- राजेश मालिक और बिचौलिए को मना क्यों नहीं कर सका?
- दीपक के साथ राजेश की दोस्ती क्यों गहरी होने लगी?
- शहर से वापस आये लोगों में क्या बदलाव दिखते हैं?
- शहरों में रहने वाले लोगों के साथ किस किस तरह के खतरे आते हैं?
- घर से बाहर जाने वाले लोगों को शोषण से बचने के लिए क्या करना चाहिये?

इन सवालो से सम्बन्धित मुद्दों पर विस्तृत जानकारी के लिए अन्त में दिए गए देखें 'जानकारी प्रपत्र'।

कुछ दिन बाद राजेश पास के ही गांव में लड़की देखने गया और दो महीने बाद राजेश की शादी रमा के साथ हो गई। राजेश शादी के बाद गॉव में ही रहने लगा। कुछ दिनों बाद रमा ने एक बेटी को जन्म दिया। दो साल बाद घर के खर्चे व जिम्मेदारियां बढ़ने के कारण राजेश को लगा कि अब उसे दोबारा शहर जाना चाहिए। उसने सोचा शहर में ठिकाना बनाने के बाद रमा को भी अपने साथ ले आयेगा। रमा भी यह सोचकर राजी हो गई कि ठिकाना हो जाने के बाद राजेश अपने साथ उसे भी शहर ले जायेगा। राजेश फिर अपने उन्हीं सवालों के तनावों के साथ घर वालों से विदा लेकर, शहर के लिए गांव से निकल पड़ा।

राजेश ने शहर पहुंचकर दीपक को अपनी शादी व बच्चे के बारे में बताया, जिसे सुनकर दीपक बहुत खुश हुआ। उस रात दोनों ने मिलकर खूब दारू पी व एक साथ सोए क्योंकि उस दिन कमरे में कोई और नहीं था। कुछ दिनों के बाद राजेश को फिर से उसी बेल्ड़िग की दुकान में काम मिल गया। दिन भर काम के बाद शाम को राजेश व दीपक साथ बैठकर सिगरेट व दारू भी पी लेते और ये सिलसिला आगे भी जारी रहा। धीरे धीरे उन दोनों के मन में अपनी मर्दानगी के प्रति आशंकाएं भी बढ़ने लगी।

एक शाम शराब पीने के बाद उन्होनें सोचा क्यों न अपनी मर्दानगी को जांचा जाए और वे दोनों कोठे पर चले गये। कोठे पर उन्होने बिना कंण्डोम प्रयोग किए सेक्स किया, जिसके बदले उन्हें ज्यादा पैसे भी देने पड़े। यह सब कुछ दिन तो चलता रहा पर बाद में उन्हें कोठे पर जाना

मंहगा लगने लगा और अब उन्होनें कोठे पर जाने के बजाय पास की ही बस्ती के बाहर यौन काम करने वाली लड़कियों के पास जाना शुरू कर दिया। यहां पर वे बिना कण्डोम के सेक्स भी कर सकते थे। राजेश का मानना था कि बिना कण्डोम के यौन सम्बंध में ज्यादा मजा आता है। अब इन चीजों में राजेश का काफी पैसा खर्च होने लगा।

## क्या आप बता सकते हैं?

- राजेश और दीपक के बीच किस तरह के सम्बंध थे?
- यौन सम्बंधों को लेकर राजेश की क्या सोच थी?
- दीपक और राजेश यौन कर्मियों के पास क्यों जाने लगे?
- कण्डोम इस्तेमाल करने से यौन आनन्द कम होता है? इसके बारे में आपकी क्या राय है?
- जिम्मेदारपूर्ण सम्बंधों के लिए हमारी क्या जिम्मेदारी बनती है?

इन सवालो से सम्बन्धित मुद्‌दों पर विस्तृत जानकारी के लिए अन्त में दिए गए देखें 'जानकारी प्रपत्र'।

अब राजेश का काफी पैसा सिगरेट, शराब व मनोरंजन में खर्च हो जाता जिससे वह पैसा नहीं बचा पा रहा था, इसलिए वह पिछले तीन सालों से घर भी नहीं जा पाया। उसकी तबियत भी कुछ दिनों से ठीक नहीं चल रही थी, वजन भी घट रहा था और खाँसी भी आ रही थी। वह एक–दो बार नजदीकी सरकारी अस्पताल गया जहां कोई पहचान कार्ड या राशन कार्ड न होने के कारण डाक्टरों ने इलाज करने से मना कर दिया। इसके बाद उसने एक मेडिकल स्टोर में जाकर कुछ दवाईयाँ ले ली। फिर भी उसकी खाँसी और बुखार कम नहीं हो रहा था। धीरे–धीरे राजेश दुबला और अंदर ही अंदर कमजोर होने लगा। दीपक ने कई बार उसे समझाया कि अपनी जाँच करवा ले लेकिन राजेश मेडिकल जाँच से डर रहा था।

## क्या आप बता सकते हैं?

- मेडिकल जांच कराने से राजेश क्यो डर रहा था?
- एच.आई.वी./एड्स से आप क्या समझते हैं?
- एच.आई.वी. संक्रमण से बचने के लिए हम क्या कर सकते हैं?

इन सवालो से सम्बन्धित मुद्दों पर विस्तृत जानकारी के लिए अन्त में दिए गए देखें 'जानकारी प्रपत्र'।

इधर पिछले तीन–चार सालों में राजेश के घर न आने पर उसके घर वालों को काफी चिन्ता होने लगी और उन्होने राजेश को बुलाने के लिए चिट्ठी लिखी। पहले से ही मन से कमजोर राजेश चिट्ठी पढ़कर और भी परेशान होने लगा। शहर में बात न बनते देख राजेश गांव वापस जाने की सोचने लगा। थोड़े बहुत पैसे जमा करके राजेश ने अपने गांव वापस जाने के लिए दीपक से विदा लिया। मन में डर, शंकाएं व सवालों के साथ राजेश यह सोचते हुए अपने गांव चल पड़ा कि फिर वह वापस नहीं आयेगा। घर वापस आया तो घरवालों को बहुत खुशी हुई। लेकिन राजेश के चेहरे पर उदासी दिखाई दे रही थी। दवाईयों के असर से उसकी बीमारी छिपी हुई थी।

राजेश ने अपनी तबियत के बारे में किसी को कुछ नहीं बताया और अब उसका मन भी घर में बिल्कुल नहीं लग रहा था। उसकी बच्ची भी स्कूल जाने लगी थी, साथ ही घर के दूसरे खर्चे भी बढ़ रहे थे। इसलिए घर का खर्चा उठाने के लिए उसने आस–पास के गांव में सब्जी बेचनें का काम शुरू कर दिया। लेकिन सब्जी बेचनें से इतनी आमदनी नहीं होती जिससे हंसी–खुशी परिवार चल सके। उसका काफी पैसा दवा में भी खर्च हो जाता, जिससे राजेश और भी दुःखी रहने लगा।

राजेश को परेशान व दिन प्रतिदिन कमजोर पड़ते देख रमा चिन्तित रहती। राजेश दिनभर गांव के बाहर रहता तो उसे अकेलापन महसूस होता। शाम को राजेश वापस आता तो रमा उसकी सेवा में

लगी रहती। कभी–कभी राजेश शराब पीकर आता तो रमा का जी घबरा जाता। गरीबी और तनाव से जूझते दिन बीतते गये। एक दिन राजेश जल्दी घर वापस आ गया लेकिन रमा पड़ोस के घर में अपनी सहेली के यहां बैठी थी। शक की भावना से भरे राजेश ने उसका विश्वास नहीं किया। अब वह यह पूछने लगा कि वह किस मर्द से मिलती है? रमा राजेश को मनाती रही लेकिन राजेश को उसकी बातों पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं हुआ और उस रात रमा की जमकर मार पिटाई की। इसके बाद दिनो–दिन उनके सम्बंधों में तनाव बढ़ता गया और रमा पर हिंसा का सिलसिला जारी रहा। अब रमा बीमार भी रहने लगी।

इसी दौरान रमा ने एक सुन्दर बेटे को जन्म दिया। बेटा अब बड़ा हो रहा था लेकिन हमेशा बीमार रहता। बुखार कभी कम न होता, दस्त लग जाते तो हफ्तों बंद नहीं होते। इसी बीच रमा की तबियत काफी बिगड़ गई और उसे अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। डॉक्टर ने जब रमा के खून की जाँच की तब वह एच.आई.वी. पॉजिटिव पाई गई। डॉक्टर ने राजेश को भी अपनी जाँच कराने की सलाह दी। पहले से ही बीमार चल रहे राजेश के मन में जो डर था वह सही निकला। आखिर उसे अपनी बीमार रहने की वजह समझ में आ गई। जॉच के बाद राजेश एच.आई.वी. पॉजिटिव पाया गया।

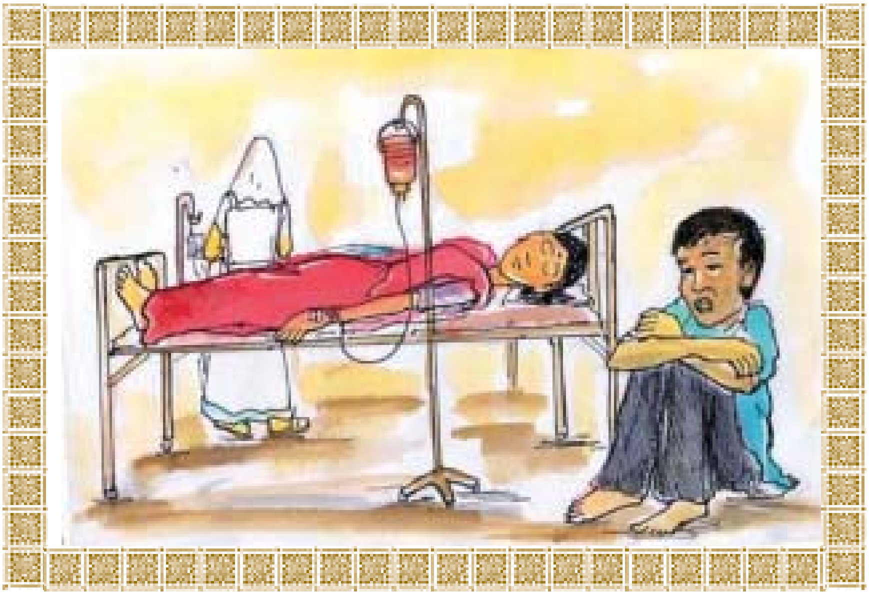

धीरे–धीरे यह बात आग की तरह पूरे गांव में फैल गई कि रमा और राजेश को एच.आई.वी. है। पिछले साल गांव में एक व्यक्ति की एड्स से मौत हुई थी, गांव वाले उसके क्रियाकर्म में शामिल नही हुए थे। उसके बाद उसके घर वालों को एक तरह से समाज के बाहर कर दिया गया था। यह सोचकर रमा और राजेश का जी और भी घबड़ाने लगा। राजेश के मित्र भी अब उसको भूल गये थे। गॉव के लोगों ने उनसे बात करना व उठना–बैठना भी छोड़ दिया था।

## क्या आप बता सकते हैं?

- राजेश, रमा पर हिंसा क्यों करने लगा?
- रमा के एच.आई.वी. सक्रंमित होने के लिए कौन जिम्मेदार है?
- एच.आई.वी./एड्स पीड़ित लोगों की मदद कैसे कर सकते हैं?

इन सवालो से सम्बन्धित मुद्‌दों पर विस्तृत जानकारी के लिए अन्त में दिए गए देखें ‘जानकारी प्रपत्र’।

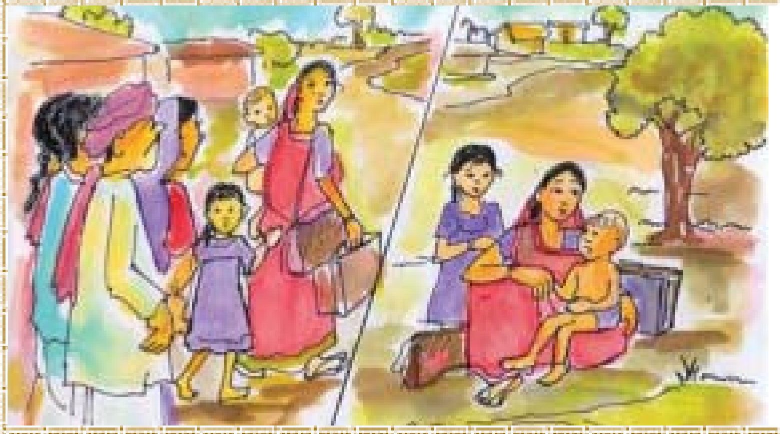

कुछ समय बाद राजेश की मृत्यु हो गई, जिसके बाद गांव के लोग रमा के बारे में तरह–तरह की चर्चा करने लगे। रमा के ऊपर तो अब विपत्तियों का पहाड़ सा टूट गया, बात–बात में हमेशा उसी को दोषी ठहराया जाने लगा और कहा जाने लगा कि यह करमजली ही राजेश को खा गई। पड़ोस की महिलाएं रमा को देखकर ताने मारने लगी और घर आते देखकर दरबाजा बन्द कर लेती। कुछ दिनों बाद गांव वालों ने परिवार वालों के साथ मिलकर रमा को मारपीट कर दोनों बच्चों सहित जबरदस्ती गांव से बाहर निकाल दिया। रमा अब जाये तो कहां जाये, उसके रहने का तो अब कोई ठिकाना नहीं रहा। जिसके बाद वह गांव के बाहर खेत में ही एक झोपड़ी बनाकर अपने दोनों बच्चों के साथ रहने लगी।

## क्या आप बता सकते हैं?

- रमा के ऊपर कौन–कौन से आरोप लगाये जाने लगे?
- क्या इन परिस्थितियों के लिए रमा जिम्मेदार थी?
- गांव में एच.आई.वी./एड्स संक्रमित व्यक्तियों के साथ किस तरह का भेदभावपूर्ण व्यवहार किया जाता है?

इन सवालो से सम्बन्धित मुद्‌दों पर विस्तृत जानकारी के लिए अन्त में दिए गए देखें 'जानकारी प्रपत्र'।

# जानकारी प्रपत्र

जानकारी प्रपत्र

# 1 पलायन

आमतौर पर यदि देखा जाय तो पलायन गांवों से शहर में या छोटे शहर से बड़े शहर में या अपने देश से दूसरे देश में होता है। मजदूरी, कृषि मजदूरी, नौकरी, पढ़ाई करने या अन्य कई कामों के लिए लोग अपने घरों को छोड़कर जाते हैं। कभी कभी विशेष परिस्थितियों जिसमें युद्ध, जातीय व धार्मिक दंगे, महामारी आदि कारणों से भी लोग अपने घरों को छोड़ने के लिए विवश होते हैं। इस तरह पलायन एक या दो महीने से लेकर कई सालों तक का होता है। पलायन करने वालों में मजदूर, सरकारी नौकरी पेशा, व्यवसायी, युवा, छात्र आदि शामिल हैं।

## भारत में पलायन की स्थिति

- आई.एल.ओ. के मुताबिक दुनिया भर में कुल 8 करोड़ 10 लाख लोग काम के संदर्भ में पलायन किए हुए हैं। इसमें रेफ्यूजी जो 50 लाख होने का अनुमान है वह शामिल नही है। (सन् 2000)
- यह आंकडे किसी भी मध्यम आकार के देश जैसे तुर्की या जर्मनी, फिलीपीन्स या वियतनाम इनका है।
- हर चार घर में से तीन घरों में से किसी न किसी ने पलायन किया हुआ है।
- 1993 के नेशनल सैम्पल सर्वे के अनुसार भारत में 24.7 प्रतिशत लोग पलायन करे हुए हैं।
- जनगणना 2001 के मुताबिक 61 फीसदी लोग अपने अपने जिलों में पलायन किए हुए हैं। 24 प्रतिशत अपने राज्यों में, 13 प्रतिशत लोग दूसरे राज्यों में पलायन किए हुए हैं।
- 1999-2000 का नेशनल सैम्पल सर्वे बताता है कि उस वक्त करीब 80,64,000 व्यक्तियों ने अस्थाई और थोड़े ने कालावधि का पलायन किया हुआ था।

## पलायन करने वाले पुरुष की मजबूरियां व कमजोरियाँ

इस जेण्डर व्यवस्था के तहत घर चलाने, परिवार की देखरेख, पालन पोषण व समृद्ध बनाने के लिए पुरूषों को जिम्मेदारी दी गई है। इन जिम्मेदारियों का निर्वहन करने के लिए अक्सर पुरूषों को निम्न वजहों से पलायन करना पड़ता है :

1. काम के अवसरों की कमी – स्थानीय स्तर पर काम के अवसर बहुत ही कम होते हैं। इसका एक प्रमुख कारण यह भी होता है कि स्थानीय फैक्ट्रियों या राज्य परियोजनाओं में स्थानीय लोगों को नही रखा जाता।
2. फसल उत्पादन न होना, नगदी फसल की कमी, सिचाई सुविधा न होना, कृषि लागत का अधिक होना, ब्याज दर अधिक होना।
3. धर्म, वर्ग, जातिगत भेदभाव व हिंसा के कारण भी परीवार की सुरक्षा के लिए घर के बाहर जाना पड़ता है। बाढ़ व सूखा जो फसल को नष्ट कर देता है जिससे साल में एक फसल लेना भी मुश्किल होता है।
4. परिवार में बंटवारा और अपेक्षाएं, अभिलाषाएं और विवषताएं पुरूष सदस्यों को पुरूष होने के नाते कमाने का दबाव ड़ालती हैं।
5. सामाजिक स्थिति और सम्मान का सवाल – बाहर जाकर लोग कमतर समझा जाने वाला काम भी करते हैं फिर भी वे इस प्रकार से बताते हैं जैसे नौकरी कर रहे हों और अच्छा पैसा कमा रहे हों। इससे दहेज भी बढ़कर मिलता है।
6. कुछ पिता सोंचते हैं कि अगर गांव के माहौल में बच्चें रहेगें तो बिगड़ जायेगे इसलिए भी वे शहर भेजना चाहते हैं।
7. यद्धपि वे शहर में कर्ज में होते हैं फिर घर लौटकर शहर के कल्पनात्मक कहानियां सुनाते हैं और शहर के आकर्षक वस्तुओं का दिखावा करते हैं। जिससे माँ-बाप अपने कम से कम एक बेटें को नौकरी के लिए घर के बाहर बड़े शहरो में ही भेजना चाहते हैं।
8. स्थानीय कारखानों में स्थानीय लोगों की अपेक्षा बाहर के लोगों को ज्यादा प्राथमिकता देते हैं क्योंकि संगठनात्मक क्रियाकलापों का भय नही रहता साथ ही स्थानीय स्तर पर कुशल लोगों की कमी रहती है।

जानकारी प्रपत्र

## पलायन का एच.आई.वी. से सम्बंध

जैसा कि आप जानते हैं कि एच.आई.वी. सक्रंमित व्यक्ति के साथ संभोग करने, सक्रंमित व्यक्ति का खून चढ़ाने, दूषित सुईयों व सिरीजों के इस्तेमाल से फैलता है। पलायन करने वाले व्यक्ति अक्सर ऐसी परिस्थिति से गुजरते हैं जिसके चलते उनमें एच.आई.वी. सक्रमित होने का खतरा ज्यादा रहता है। पलायन करने वाले व्यक्ति के साथ जो परिस्थितियाँ जुड़ी हुई हैं वे निम्न प्रकार हैं -

1. घर व परिवार से दूर रहने के कारण अकेलापन रहता है जिसके चलते अकेलापन दूर करने के लिए यौन साथी की तलाश व सामाजिक दबाव के चलते असुरक्षित यौन सम्बंध बन जाते हैं।
2. नई जगह, नया शहर होने के कारण जान पहचान व जानकारी के अभाव में स्वास्थ्य सुविधाओं तक न तो पहुंच बन पाती और न ही उनका लाभ मिल पाता है। साथ ही स्वास्थ्य केन्द्रो पर उनके साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार किया जाता है जिसके कारण वे सस्ता ईलाज ढूढ़ते हैं।
3. चूंकि शहर में पैसा कमाने आये हैं इसलिए पैसा बचाने के लिए भी सस्ता ईलाज व सस्ती सुविधाएं ढूढ़ते हैं।
4. काम के तलाश में ज्यादातर लोग समूह के रूप में अन्य पुरूष साथियों के साथ रहते हैं जहां पर यौन भावनाओं को लेकर आपस में हंसी मजाक करते हैं तथा उनके साथ यौन सम्बंध बन जाते हैं।
5. शहर से घर आये हुए पुरूष जो एच.आई.वी. सक्रंमित होते हैं उनसे घर की महिला को सक्रंमित होने का खतरा रहता है।
6. काम की तलाश में बाहर गये लोगों का मालिक या बिचौलियों के द्वारा भी यौन शोषण की संभावना रहती है।

# 2 पलायन व सत्ता

सबसे पहले सत्ता को समझने की जरुरत हैं। सत्ता को आजादी व ताकत से जोड़ा जाता है। इसमें एक सत्ताधारी होता है, और दूसरा सत्ताहीन। जिसके पास निर्णय लेने की ताकत व आजादी होती है वह सत्ताधारी कहलाता है और जिस पर वह अपने निर्णय लागू करता है या जिनके पास यह ताकत और आजादी नहीं है वह सत्ताहीन कहलाता है।

यहां पर सबसे महत्वपूर्ण बात ध्यान देने वाली यह है कि सत्ता हमेशा एक जैसी नहीं रहती। यह स्थानांतरित होती रहती है। जैसे - जो व्यक्ति घर में सत्ताधारी के रुप में व्यवस्था को नियंत्रित करता है, वहीं ऑफिस या काम की जगह पर दूसरों की सत्ता से दबता है। इसका मतलब सत्ता समय व स्थान बदलने पर बदलती है।

यहां पर अगर सत्ता को पलायन के संदर्भ में देखें तो दोनों की तरह परिस्थितियां देखने को मिलती है। जैसे - वही व्यक्ति जब गांवों में अपने परिवेश में रहता है तो कई मामलों में सत्ता उसके पास रहती है, लेकिन जब वह शहर पहुंचता है, तो वह अपने आपको वहां सत्ताहीन समझता है। जब व्यक्ति सत्ताहीन होता है तो उसे कई तरह के फैसलों में समझौता करना पड़ता है। उसे मजबूरी बस कई ऐसे काम व निर्णय मजबूरी बस करने पड़ते है। क्योंकि उन्हें दूसरा कोई चारा नहीं दिखता। हमें इस परिस्थिति को समझना आवश्यक है। यह एक ऐसी परिस्थिति है जब अचानक अब सत्तावान के बाद, सत्ताहीन महसूस करने लगते हैं। पुरुषों के लिए यह स्थिति और भी खतरानाक हो जाती है क्योकि उसकी परवरिश जिस अंदाज में होती है। उस तरीके में उसे बस सत्तावान बनाने की कोशिश की जाती है, यह उसके शारीरिक व्यवहारों में भी आ जाती है।

जानकारी प्रपत्र

लेकिन वहीं दूसरी तरफ जब व्यक्ति शहर से गांव आता है तो वह आत्मविश्वास से परिपूर्ण लगता है। उसके पास सत्ता होती है, यह सत्ता उसे - उसके पहनावे, रहन-सहन, भाषा, पैसे व जानकारी के आधार पर मिलती है। इसी आकर्षण को देखकर बाकि युवा/लोग भी गांव से शहर जाना चाहते हैं।

पलायन कर रहे लोगों के साथ सत्ता दोनों पक्षों में जुड़ी रहती है। पलायन के दौरान सकारात्मक सोच बनाये रखने की जरुरत होती है, और जरुरत वहां पर अच्छे दोस्त बनाने की, जो दुःख-सुख में शामिल हो सके। अपने घर से लगातार सम्पर्क में रहने की, आदि। इन बातों को ध्यान में रखकर पलायनरत लोग अकेलापन, अवसाद या गलत व्यसन में अपने आप को डालने से बच सकते है। ऐसे ही दूसरे सकारात्मक कदम उठाने की जरुरत है।

# 3 एच.आई.वी और एड्स

**एड्स** – 'अंग्रेजी में एड्स का पूरा अर्थ है **'एक्वायर्ड इम्यूनो डेफिशियेंसी सिन्ड्रोम'**। एड्स उस हालात को कहते हैं जिसमें बीमारियों से लड़ने की ताक़त बिलकुल कम या खत्म हो जाती है और मनुष्य को कई तरह की बीमारियाँ घेर लेती है जो जानलेवा बन जाती है। इसका मतलब है एडस कोई बीमारी नहीं है – यह बीमारियों से न बच पाने और लड़ पाने की दशा है।

**'एच आई वी'** का अर्थ है 'ह्यूमन इम्यूनो डेफिशियेंसी वायरस'। 'एच आई वी' से संक्रमित व्यक्ति को डॉक्टरी भाषा में 'एच आई वी पॉज़िटिव' कहा जाता है। इसका पता केवल खून की जांच से ही लगाया जा सकता है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि उस व्यक्ति को 'एड्स' हो चुका है। हो सकता है 'एच. आई. वी. पॉज़िटिव' व्यक्ति में 'एड्स' के लक्षण तीन साल से बारह साल तक भी न दिखाई पड़ें, हालाँकि ऐसा व्यक्ति हमेशा–हमेशा के लिए 'एच.आई. वी.' की चपेट में आ चुका होता है और वह दूसरों को भी यह संक्रमण फैलाने की स्थिति में होता है। इस प्रकार, एड्स बीमारी वास्तव में 'एच. आई. वी.' के संक्रमण का आख़िरी नतीजा होती है – यानि जब 'एच.आई.वी. पॉज़िटिव' व्यक्ति में रोगों का मुकाबला कर सकने की शक्ति क्षीण हो जाती है। ऐसे में शरीर विभिन्न प्रकार के संक्रमणों के आगे मजबूर हो जाता है तथा एड्स का मरीज अनेक बीमारियों की चपेट में आ जाता है।

## एच.आई.वी. व एड्स में अन्तर –

एच.आई.वी. एक विषाणु है। इस विषाणु में अनुवांशिक पदार्थ डी.एन.ए. न होकर आर.एन.ए. होता है। यह नंगी आँखों से दिखाई नही देता। एच.आई.वी. विषाणु से संक्रमित व्यक्ति को एड्स हो सकता है।

## एचआईवी/एड्स फैलता है –

- असुरक्षित यौन संबंध बनाने से
- खून द्वारा
- संक्रमित मां से बच्चे को
- सुंई द्वारा

जानकारी प्रपत्र

## एचआईवी/एड्स नहीं फैलता है –

- एक थाली में खाने से
- एक दूसरे का जूठा खाने से
- एक-दूसरे के कपड़े पहनने से
- हाथ मिलाने से
- एक ही कमरे में रहने से
- एक साथ खेलने से
- एक स्कूल में पढ़ने से
- एक दफ्तर में काम करने से
- एक-दूसरे का तौलिया इस्तेमाल करने से
- एक ही शौचालय या बाथरुम इस्तेमाल करने से

## 'एच. आई. वीं.' से संक्रमित व्यक्ति के क्या लक्षण हैं?

'एच आई वी' के शरीर में प्रवेश करने के कुछ ही हफ्ते बाद कुछ लोगों में 'फ्लू' जैसे लक्षण यानि बुखार, शरीर में पीड़ा तथा सरदर्द दिखाई पड़ते हैं लेकिन कुछ समय बाद ये लक्षण गायब हो जाते हैं और संक्रमित व्यक्ति लक्षण रहित दौर में प्रवेश कर जाता है, तो तीन से बारह वर्ष तक चल सकता है।

## 'एड्स' बीमारी शुरु होने के प्रारम्भिक लक्षण क्या है?

- थकान महसूस होना
- कम समय में ही वजन रहस्मय तरीके से घटना
- एक महीने से भी ज्यादा समय तक लगातार दस्त रहना
- लंबे समय तक बुखार
- लसिका ग्रंथियों का एक से अधिक स्थान पर आकार में बढ़ जाना

## आपको एच.आई.वीं. है या नहीं, इसका पता कैसे लगाये?

किसी भी व्यक्ति के चेहरे से मालूम नहीं पड़ता है कि उसे एच.आई.वी. है या नहीं। केवल खून की जांच से ही यह मालूम हो सकता है। इस जांच को एलिसा टेस्ट कहा जाता है। इसके लिए आप किसी भी सरकारी केन्द्र में जाकर डॉक्टर से अच्छी तरह विचार विमर्श एवं सलाह लेकर आप यह टेस्ट करवा सकते हैं।

## एच.आई.वीं./एड्स से बचाव

एड्स कोई बीमारी नहीं है। यह बीमारियों से न बच पाने और लड़ पाने की दशा है। एड्स जानलेवा है क्योंकि अभी तक इसका इलाज नहीं है। पर इससे पूरी तरह बचा जा सकता है। एड्स की जानकारी ही एड्स से बचाव है। यौन संबंधों में सर्तकता व संयम बनाने की जरुरत है। हमेशा सुरक्षित यौन संबंध बनाये, यानि कण्डोम का इस्तेमाल करें। यौन रिश्तों में अपनी जिम्मेदारी को अहसास करना तथा आप व आपका साथी किसी जोखिम में न पड़े इसके लिए संयम, साथी के प्रति जवाबदेही की जिम्मेदारी उठाना आवश्यक है।

# 4 जेण्डर व एच.आई.वी.

भारत में महिलाओं में एचआईवी काफी तेजी से फैल रहा है। अक्सर आपस में बोलचाल में यह कहने व सुनने को मिलता है कि महिलाएं ही एच.आई.वी. फैलाने के लिए जिम्मेदार है। यह सही नहीं होने के बावजूद, उन्हें ही इसका दंश झेलने पड़ता है। एचआईवी और एड्स का संक्रमण व प्रभाव महिलाओं और पुरुषों के लिए बराबर नहीं होता। महिलाएं एचआईवी के खतरे में भी अधिक रहती है और उन पर इसका प्रभाव भी अधिक होता है। पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं की आवश्यकताओं और अधिकारों को महत्व नहीं दिया जाता है। महिलाओं के साथ हिंसात्मक व्यवहार, विशेष रुप से बलात्कार, शारीरिक व्यापार एवं अपहरण आदि तरह का अपराध किया जाता हैं और इस तरह के अपराध से महिलाएं एचआईवी संक्रमित भी हो जाती हैं। पुरुषों और महिलाओं के लिए यौन संबंधी नियम अलग-अलग होने के कारण महिला अपने पति को सुरक्षित यौन संबंधों के लिए भी बाध्य नहीं कर सकती। इसके चलते आज यह देखा जा रहा है कि जिन महिलाओं के केवल एक ही यौन साथी (पति), उनके बीच भी यह संक्रमण फैल रहा है। महिलाओं का अपने शरीर पर भी हक़ नहीं है। महिलाओं व लड़कियों को एच.आई.वी होने में शारीरिक से ज्यादा सामाजिक वजह है।

## शारीरिक कारण

- स्त्रियों में एचआईवी के संक्रमण का खतरा पुरुषों की अपेक्षा दोगुना होता है। वीर्य में एचआईवी के विषाणुओं की संख्या अत्यधिक होती है जो कि योनि में अधिक समय तक रहता है।
- योनि का दायरा बड़ा होता है और उसकी झिल्ली बहुत नाजुक होती है जिसकी वजह से एच.आई.वी. आसानी से खून में प्रवेश कर जाता है।
- कम उम्र की लड़कियों की योनि और गुदा ज्यादा नाजुक होती है।

## सामाजिक कारण

- सेक्स के मामले में अक्सर औरतों की पसन्द, नापसंद, मर्जी-नामर्ज़ी का ध्यान नहीं रखा जाता।
- वे अपने पति/साथी को सेक्स के लिए मना नहीं कर पाती, कॉन्डोम लगाने के लिए राजी नहीं कर पाती। इसलिए उन्हें पति या यौन साथी का दिया हुआ एच.आई.वी. भी कबूलना पड़ता है।

जानकारी प्रपत्र

- संभोग में महिलाओं के यौनि को चोट पहुंचने की संभावना होती है, और यह तब और ज्यादा हो जाती है जब संभोग जबदरस्ती या कम उम्र की बच्ची के साथ हो।
- छोटी उम्र में ही लड़कियों की शादी कर दी जाती है। जो लड़कियों अपने शरीर व सेक्स के बारे में बात करती है उन्हें बुरी या गंदी लड़की कहा जाता है।
- अधिकतर महिलाएं अपने इलाज के लिए अस्पताल नहीं जाती हैं, क्योंकि वे आर्थिक तौर पर पुरुषों पर निर्भर हैं।
- बहुत सी लड़कियों को जबरदस्ती यौन व्यवसाय में धकेल दिया जाता है।
- लड़कियाँ ज्यादातर अपने पति, दूसरे साथी या ग्राहक से उम्र में छोटी होती है। इस वजह से वे यौन रिश्तों में मर्दों से कमजोर होती हैं।
- महिलाओं को अपने प्रजनन स्वास्थ्य के चलते अक्सर जांच करानी पड़ती है। जिसकी वजह से वे एच.आई.वी. से ग्रसित हैं ये पहले पता चल जाता है। जिसकी चलते महिलाओं के ऊपर सारा दोष मढ़ दिया जाता है। जबकि पुरुषों के मामले में ऐसा नही, उन्हें अपना नियमित जाँच नहीं कराते।
- अगर महिला विधवा है और एच.आई.वी. संक्रमित भी है तो उसकी जिन्दगी और भी बदतर है। एच.आई.वी. विधवा को न केवल अपने पति के गुजर जाने के दुख का बोझ ढोना पड़ता है और आर्थिक मुश्किल से गुजरना पड़ता है बल्कि उन्हे एच.आई.वी. होने के कंलक को भी झेलना पड़ता है। उन्हें अपने स्वास्थ्य व जो बच्चे एच.आई.वी. से प्रभावित हैं उनके स्वास्थ्य पर भी खर्च के बोझ को उठाना पड़ता है।

## आर्थिक कारण

- कई बार महिलाएं दयनीय आर्थिक व सामाजिक स्थिति को लेकर मजबूरी के चलते एच.आई.वी. से संक्रमित हो जाते हैं। गरीब व समाज में दोयम दर्जे के चलते महिलाओं को अपने जीवन यापन करने के लिए अपने शरीर का सौदा तक करना पड़ता है।
- कई सामाजिक व आर्थिक असमानता महिलाओं को कण्डोम पहनने व पहनने के लिए कहने की सत्ता नहीं देता। जो महिलाएं यौन कार्य करती हैं वे भी सुरक्षित सेक्स करने के लिए समझौता नहीं कर पाती है।

## मर्दानगी

देखा जाये तो मर्दानगी की कोई निश्चित परिभाषा नहीं है। आम परिभाषा जो इस्तेमाल की जाती है कि वह यह है कि पुरुषों के पुरुषोचित वाले खास तरह के व्यवहार मर्दानगी के रुप में देखा जाता है। ये भी कहा जाता है कि मर्दानगी पुरूष का

लिबास है, और मर्दानगी एक ऐसा अभ्यास है तो सत्ता तक पहुँचाने व उसे बनाये रखने में मदद करती है।

## मर्दानगी व सत्ता

मर्दानगी का संबंध स्त्री व पुरूष से नहीं है, बल्कि ताकत होने या ना होने से है। जैसे आर्थिक व सामाजिक ताकत वाली महिला भी पुरूष पर रोब/धौंस जमाती है। किसी व्यक्ति की मर्दानगी का स्वरूप तय करने में उसकी उम्र, जाति, पद, वर्ग तथा लैंगिकता का हाथ होता है। जो मर्द आक्रामक नहीं होते, उन्हें चूडियां देकर तथा 'औरत जैसा' कहकर अपमानित किया जाता है। दूसरी ओर जो औरतें नियंत्रक होती हैं उन्हें 'मर्द जैसी' कहकर तारीफ की जाती है। जैसे- ''खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी''। मर्दानगी केवल पुरूषों से जुड़ी नहीं है। इसका मतलब कोई भी चाहे वह पुरूष हो, या औरत, जो सत्ता व नेतृत्व के पद पर उसे मर्द समझा जाता है।

## मर्दानगी व एच.आई.वी

पुरुष अक्सर अपने यौनिकता का प्रदर्शन मर्दानगी के रुप में करता है। उसकी यौन भावनाओं पर भी मर्दानगी हावी रहती है। अपनी पत्नी, प्रेमिका व अन्य के साथ ऐसा बर्ताव करता है कि मानो जैसे कोई जंग जीतना हो। पुरुष पर असली मर्द होने व साबित करने का दबाव होता है। असली मर्द वही जो दूसरे को दिखा सके कि उसमें दम है। यह दम उसे उसके यौन संबंधों में भी दिखाने के लिए दबाव डालता है। जिसके चलते पुरुष खुद व अपने यौन साथी को जोखिम में डाल देते हैं। कण्डोम का इस्तेमाल - अपनी शान या मर्दानगी के खिलाफ समझना, यौन साथी के मना करने को - अपनी मर्दानगी के खिलाफ समझना, यौन साथी की राय न लेना, यौन क्रिया में खुद को एक्सपर्ट मनाना, एक से ज्यादा यौन साथी हैं तो ही असली मर्द हैं, अपने को असली मर्द साबित करना, ये सब यौन साथी तथा खुद के साथ जोखिम लेना है। कई दफा हम यौन संचारित रोगों के शिकार हो जाते है, और इनके चलते हो सकता है कि हम एचआईवी से भी संक्रमित हो जायें।

जानकारी प्रपत्र

# 5 यौनिक रिश्ते व एच.आई.वी.

सेक्स को लेकर समाज में काफी भ्रान्तियां हैं और इसको लेकर काफी उत्सुकता भी रहती है। हम सभी जानते हैं कि कुछ बिमारियां सेक्स द्वारा लगती है। सेक्स के बारे में जानकारी के अभाव में हम काफी बार बहुत सारी मुश्किलों में पड़ जाते हैं, जैसे अन्चाहा गर्भ, या एसटीडी "यौन संचारित रोग" आदि। लेकिन खेद आज भी इस बात का है कि यौनिक व्यवहार को लेकर आमतौर पर चर्चा ही नहीं होती है। हमारे देश में लोग यौन शब्द से ही परहेज करते हैं। एचआईवी/एड्स के फैलाव की सबसे बड़ी वजह यौन सम्बन्धों व यौनिक व्यवहार पर चर्चा न करना है। यह भी बहुत महत्वपूर्ण है कि हमें यौनिक रिश्ते बनाने से ज्यादा उन रिश्तों की जिम्मेदारी लेना आवश्यक है। एचआईवी/एड्स का यौनिक रिश्ते से घनिष्ठ संबंध है। हम यहां पर यौनिक रिश्तों पर कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु रख रहे हैं –

## यौनिक रिश्तों के बारें समझना बहुत जरुरी है

- मानव स्वभाव से ही यौनिक होता है, अतः उसकी यौन इच्छा प्रकति की दी हुई इच्छा है।
- लोग केवल प्रजनन के लिए ही यौन नहीं करते। लोग आनन्द प्राप्ति हेतु भी यौन करते हैं।
- कुछ जवान लोग आनन्द, उत्तेजना की खोज में, या मर्दानगी दिखाने के लिए नये साथी बनाते रहते हैं। कई तो इसकी शान भी बघारते हैं।
- हमें यह मान कर चलना चाहिए कि साथी बदलने से आनन्द नहीं मिलता।
- बहुत से यौनिक रिश्ते प्यार पर आधारित होते है। यदि कोई किसी को प्यार करता है, इसलिए उस के साथ शारीरिक नजदीकी और यौन संबंध बनाने का दिल चाहता है।
- लेकिन कुछ यौनक रिश्तों में प्यार नहीं होता। सेक्स वर्कर या किसी अनजान के साथ सेक्स सिर्फ यौन करने के लिए किया जाता है। उसमें कोई भावनाएं नहीं जुड़ी होती।
- अक्सर यौन रिश्ते दबावपूर्ण व हिंसात्मक भी होते हैं। जबरन बनाये गये और गैर बराबरी के रिश्ते अन्यायपूर्ण होते है और ये रिश्ते खतरनाक भी होते है।
- हमारे देश में यौनिकता पर बहुत बड़ी चुप्पी है। इसके चलते दो सामाजिक रुप से मान्यता प्राप्त शादीशुदा लोग भी यौन संबंधों की बात सरलता से नहीं कर पाते है।
- कई बार लोग दबे-छुप तरीके से असुरक्षित यौन संबंध बनाते हैं, जो बहुत ही खतरनाक है।

## यौन रिश्ते में हमारी जिम्मेदारी

- यौन रिश्तों में विश्वास व भरोसा बहुत जरुरी है।
- यौन रिश्ते तभी सुन्दर व सुरक्षित हो सकते हैं जब वे मर्जी के आधार पर बनाये गये हों।
- हमें यौन रिश्ते मे यह भी जिम्मेदारी लेनी चाहिए कि उससे दूसरा व्यक्ति जोखिम में न पहुंच जाये।
- हमारी जिम्मेदारी होनी चाहिए कि हमें किसी को बिमारी न दें।
- हमें अपने बहुत सुन्दर रिश्ते को बर्बाद या तबाह नहीं होने देना है।
- जब भी यौन संबंध बनाये वह सुरक्षित यौन संबंध होना चाहिए यानि कि कण्डोम का इस्तेमाल करना चाहिए।
- यौन एक क्रिया है, जिस पर काबू किया जा सकता है। बस जरुरत होती है संयम की।
- अपने यौन संबंधों के लिए हम सब खुद जिम्मेदार हैं। इसकी जिम्मेदारी हमें ही उठानी होगी।
- अगर हम यौन रिश्ते बनाते हैं तो उस यौन रिश्ते की खुशहाली की जिम्मेदारी हमें उठानी हागी।

## यौनिक अधिकार की परिभाषा

यौनिक अधिकार मानव अधिकारों के मूलभूत तत्व हैं। इनमें आनंदमय यौनिकता को अनुभव करने का अधिकार शामिल है, जो अपने आप में आवश्यक है, और इसके साथ ही यह लोगों के बीच संवाद और प्रेम का मूल माध्यम है। यौनिक अधिकार, यौनिकता के जिम्मेदार प्रयोग में स्वाधीनता और स्वायत्ता के अधिकार को सम्मिलित करते हैं।

**हिरा (HERA) स्टेटमेंट**

## समलैंगिकता व एच.आई.वी.

यह बहुत ही बड़ी भ्रान्ति है कि समलैंगिक रिश्ते से एच.आई.वी. फैलता है। समलैगिक रिश्तों में माना जाता है कि गुदा मैथुन होता है, और गुदा मैथुन में रिस्क भी बहुत होता है। लेकिन दूसरी तरफ सच्चाई भी यह है कि विषमलैंगिक रिश्तों में भी गुदा मैथुन होता है। इसलिए बिना कण्डोम के शारीरिक संबंध बनाने से दोनों समलैंगिक व विषमलैंगिक में एच.आई.वी. का खतरा हो सकता है।

जानकारी प्रपत्र

# 6 एड्स, कलंक और भेदभाव

अक्सर यह देखने में आता है कि एचआईवी पॉजिटिव लोगों के साथ बुरा बर्ताव होता है। लोग उनसे मिलने, जुलने से घबराते हैं यहां तक डॉक्टर/नर्स भी उनका इलाज करने से कतराते हैं। लोग उनसे तथा उनके परिवार वालों से भेदभाव करते हैं। इस तरह की प्रतिक्रियाओं से एड्स का खतरा और बढ़ेगा और हमारे बीच असुरक्षा, भय और तनाव भी बढ़ेगा। डर के मारे कोई भी एचआईवी पॉजिटिव व्यक्ति किसी को बतायेगें नहीं और अपना इलाज नहीं करायेगें, यह सबके लिए खतरनाक है। एच. आई.वी और एडस से संबंधित भेदभाव, कंलक हमारे समाज में कई स्तरों पर देखा जाता है। जिनमें से हैं परिवार, समुदाय, नौकरी और काम करने वाले स्थानों व स्वास्थ्य तंत्र में। हमारे समाज में जहां हमारा हर एक कदम जेण्डर भूमिकाओं की बेड़ियों में बंधा पड़ा हैं, ऐसे समाज में एच.आई.वी. में भी महिलाओं को ही इसका दंश झेलना पड़ता है।

## परिवार में भेदभाव

कई मर्द ऐसे होते हैं जो यह जानते हुए भी कि वो एच.आई.वी पॉजीटिव हैं, इसकी जानकारी वह न तो अपनी पत्नी को, न यौन साथी को या परिवार के अन्य लोगों को बताते हैं। इसके पीछे की जो वजह समझ में आती हैं – उनमें से एक तो यह हो सकती है कि एकल पुरुष इसलिए नहीं बताता कि उसकी यौन साथी मिलने में मुश्किल न हो, दूसरा यह वजह हो सकती है कि पुरुष शर्म महसूस कर रहा हो अपनी पत्नी व अन्य को बताने में। एड्स को परिवार के अन्दर लाने के लिए अधिकांशत महिलाओं पर इल्जाम लगाया जाता है। एच.आई.वी. पॉजिटिव पायी जाने पर उसके उसके बच्चे से दूर कर दिया जाता है, परिवार के अन्दर उससे साथ भेदभाव होता है। उसको घर से निकाल दिया जाता है उस पर शारीरिक हिंसा भी की जाती है। उसका परित्याग कर दिया जाता है।

## समाज में भेदभाव

हाल की ही घटनाओं से यह मामला समाने आया कि उ.प्र. के कई क्षेत्रों में एच.आई.वी. पॉजिटिव लोगों के साथ बहुत अमानवीय व्यवाहर किया जाता है। उन्हें गांव से अलग कर दिया जाता है। उनके साथ नाते-रिश्ते तोड़ दिये जाते हैं। उनके पास आने-जाने से लोग कतराते हैं। उन्हें सार्वजनिक जगह से पानी भरने की भी अनुमति नहीं होती, यहां तक कि उनके बच्चों के साथ भी भेदभाव किया जाता है। समाज के लोगों अपने बच्चों को उनसे दूर रखने का प्रयास करते हैं। स्कूल में भी उनका दाखिला नहीं होने दिया जाता। एक दो घटनाएं तो ऐसी थी कि उनमें परिवार के लोगों को पत्थर फेंक कर मार दिया गया। लोगों के रोज-रोज के ताने अलग से सुनने को मिलते हैं।

## इलाज व नौकरी में भेदभाव

अस्पताल में उपचार के लिए गए एच.आई.वी. पॉजिटिव लोगों के साथ डॉक्टरों द्वारा भी आमनवीय व्यवहार किया जाता है। उनके प्रति किसी तरह की संवेदनशीलता नहीं दिखती। उनको छूने से भी डॉक्टर मना कर देते है।

कई ऐसी घटनाएं भी निकल कर आयी कि नौकरी करने वाले व्यक्ति को एच.आई.वी. पॉजिटिव हो जाता है तो उन्हें नौकरी से निकाल दिया जाता है।

## कंलक का डर व आत्मग्लानीं

वह व्यक्ति जिसके शरीर में एच.आई.वी. मौजूद है या उसे एड्स हो गया है, ऐसा पाया गया है कि वे भी एक सामान्य जिन्दगी जी सकते हैं यहां तक 15 से 20 साल भी इन परिस्थिति में सामान्य जिन्दगी बसर कर सकते हैं। लेकिन यह जिन्दगी तभी संभव है जब अन्दर से जीने की इच्छा प्रबल हों। लेकिन समाज में उनके साथ परिवार से लेकर बाहरी समाज तक भेदभाव किया जाता है तथा उन्हें तमाम रिश्ते-नातों, बिरादरी, शुभ कार्यों व सामाजिक कार्यो से दूर रखा जाता है। उन्हें सामाजिक तिरस्कार झेलना पड़ता है। इन सब वजहों से एचआईवी संक्रमित व्यक्तियों के अंदर हीनभावना पैदा होती है। उन्हें आत्मग्लानी होती है। जिससे उनके मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा असर पड़ता। उनके जीवन जीने की इच्छा क्षीण होती जाती है।

जानकारी प्रपत्र

## सामाजिक सुरक्षा व प्रतिष्ठा

किसी भी व्यक्ति के लिए सामाजिक सुरक्षा व प्रतिष्ठा का होना बहुत जरुरी होता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है इसलिए उसे सामाजिक रिश्तों के ताने बाने में जीने की आदत पड़ जाती है। ये सामाजिक रिश्ते उसे सत्ता प्रदान करते है, व सामाजिक सुरक्षा भी प्रदान करते है। उसे इन रिश्तों से प्रतिष्ठा भी मिलती है। लेकिन जो व्यक्ति एचआईवी संक्रमित या एड्स से प्रभावित होते हैं उन्हें सामाजिक कंलक व भेदभाव के चलते इन सामाजिक बंधनों से दूर रखा जाता है और ये सामाजिक रिश्ते ही उससे भेदभाव करने लगते हैं।

**यहां पर यह जानना बहुत जरुरी है हमारी लड़ाई एच.आई.वीं. से है न कि उस व्यक्ति से जो एच.आई.वीं. संक्रमित है या जिसे एड्स हुआ है।**

**इन्हें खौफ नहीं दवा चाहिए,**
**घृणा नहीं प्यार चाहिए,**
**तिरस्कार नही हम सब का साथ चाहिए।**

# इस किताब पर आपके विचार

इस किताब पर या किताब में उठाए गए मुद्दों पर आपके विचार, सुझाव तथा प्रश्न हमें लिख भेजिए :

..................................................................

..................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

हमारा पता :

**सहयोग**

**A 240, Indiranagar, Lucknow 226 016**